मातृवन्दना

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

नर जीवन के स्वार्थ सकल,
बलि हों तेरे चरणों पर, माँ,
मेरे श्रम-संचित सब फल ।

जीवन के रथ पर चढ़कर,
सदा मृत्यु-पथ पर बढ़कर,
महाकाल के खरतर शर
सह सकूँ, मुझे तू कर दृढ़तर ।
जागे मेरे उर में तेरी,
मूर्ति अश्रु जल-धौत विमल ।
दृग जल से पा बल, बलि कर दूँ ।
जननि, जन्म-श्रम-संचित सब फल ।

बाधाएँ, आएँ तन पर,
देखूँ तुझे नयन मन भर ।
मुझे देख तो सजल दृगों से
अपलक, उर के शतदल पर,
क्लेद युक्त, अपना तन दूँगा,
मुक्त करूँगा तुझे अटल,
तेरे चरणों पर देकर बलि,
सकल श्रेय-श्रम-संचित सब फल ।

भावबोध *:- प्रस्तुत कविता के कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं । इस कविता में कवि ने भारत माँ की वन्दना की है । यह कविता कवि ने उस समय रची जब हमारा देश परतन्त्र था । इसमें कवि के देशप्रेम तथा बलिदान की भावना सशक्त शब्दों में व्यक्त हुई है ।*

- शब्दार्थ -

सकल - सब, समस्त । महाकाल - मृत्यु । बलि - न्योछावर । खरतर - बहुत तेज़ । चरण - पाँव । उर - हृदय । श्रम संचित - परिश्रम द्वारा एकत्रित । शर - बाण । अपलक - बिना पलक झपके । अश्रु - आँसू । शतदल - कमल । क्लेद युक्त - पसीने से लथपथ । श्रेय - महत्व, यश । बल - शक्ति । दृग - नेत्र, आँख, नयन । दृढ़तर - मज़बूत । विमल - स्वच्छ । सजल - जल युक्त । बाधा - रुकावट, कष्ट । श्रेय - श्रेष्ठ, उत्तम, बहुत अच्छा । धौत - धोया हुआ ।

प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) कवि 'भारत माँ' से अपने को दृढ़तर बनाने की प्रार्थना क्यों करता है ?

(ii) कविता के आधार पर कवि के जीवन का लक्ष्य बताइए ।

(iii) कवि अपने हृदय में भारत माँ की कैसी मूर्ति जागृत करना चाहता है ?

(iv) कविता का सारांश लिखते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।

2. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) कवि किसकी वंदना करता है ?

(ii) कविता की किस पंक्ति से पता चलता है कि यह कविता स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले लिखी गई थी ?

(iii) भारत माँ के चरणों पर कवि क्या बलि चढ़ाना चाहता है ?

(iv) कवि किसके बाण सहने के लिए मजबूत होना चाहता है ?

(v) 'सजल दृगों' का अर्थ समझाइए ।

(vi) किसके उर को शतदल के साथ तुलना की गई है ?

(vii) 'दृग जल से पा बल' - में किसके आँसू के बारे में कहा गया है ?

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(i) नर जीवन के स्वार्थ सकल,
बलि हों तेरे चरणों पर, माँ,
मेरे श्रम-संचित सब फल ।

(ii) जागे मेरे उर में तेरी
मूर्ति अश्रु जल-धौत विमल ।

(iii) क्लेद युक्त, अपना तन दूँगा,
मुक्त करूँगा तुझे अटल ।

भाषा ज्ञान

4. (i) प्रत्येक के दो-दो समानार्थक शब्द लिखिए -

नर	.....	.....	मृत्यु	.....	.....
जीवन	.....	.....	शर	.....	.....
उर	.....	.....	विमल	.....	.....
दृग	.....	.....	माँ	.....	.....

5. विलोम शब्द लिखिए -

मृत्यु, विमल, अटल, बल, स्वार्थ, जगना

6. निम्नलिखित शब्द अलग-अलग प्रसंगों में प्रयोग किए जाने पर भिन्न भिन्न अर्थ-बोध कराते हैं ।

ऐसे शब्दों को अनेकार्थक शब्द कहते हैं ।

उदाहरण - कर :- हाथ, सूंड़, किरण, टैक्स ।

ऐसे ही नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए एवं वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

गुरु, गो, हंस, वन, पत्र, तारा, धन ।

●